

Padma Shri



SHRI GOPIRAM BARGAYAN BURABHAKAT

Shri Gopiram Bargayan Burabhakat, a life devoted to the Sattriya Tradition, has played the role of a performer, director, designer, sculptor etc. at different times. He is an expert in all forms of Sattriya tradition and a doyen of Sattriya Bhokots and Sattriya Artists of Assam. He is a self-effacing maestro, who never sought publicity but always strived to achieve excellence.

2. Born on 1st January, 1925, Shri Gopiram is one of the longest serving Bhokots of Assam. He has stood as a backbone of the Sattriya traditions amidst all the natural and social upheavals. The Sattriya Tradition, since the 15th century, grew as a part of the Vaishnavite Bhakti Movement in Hindu Monasteries of Assam, called 'Sattra'. The art was developed and practiced by monks (called Bhokots in Sattras) in the form of dance/dramas about legends and mythologies of Lord Krishna. He was groomed in the traditional music of the region — the monastic Borgeet, Ojapali and other forms of Sattriya art — by eminent teachers including Giuram Ozha, Khageswar Gayan, Bholanath Namlogowa, Sonaram Bargayan, Chandradhar Sarmah Bhagawati and Anandiram Bargayan. He is known for his leadership as a Samuhiya Burabhakat and has made ground breaking contribution as teacher, Bargayan, Borojah, Charitratula, Mahapurush Madhavdev.

3. Shri Gopiram has trained and mentored many new generation of Sattriya artists and performers who have taken Sattriya traditions to different corners of the world. Since his arrival at the Sri Sri Uttar Kamalabari Sattra in 1930, at the age of five, he has devoted his whole life, more than nine decades, to the practice, preservation, promotion and propagation of Sattriya culture amongst his disciples, Bhokots and the society at large. In his ninety one year long journey as a Bhokot, he has attained many milestones based on his capabilities and as per Sattriya traditions. He was conferred the status of 'Bargayan' and 'Borojah' in 1982 by the Sattra Mahasabha of Assam for his excellence in Borgeet i.e. collection of lyrical songs composed by Mahapurush Srimanta Sankardev; Ankiya Geet i.e. musical rendition during Bhaona performances; Gurubhotima i.e. description of the life and works of Mahapurush Srimanta Sankardev; Devabhotima i.e. praise of gods etc. and for his excellence in all 12 Pacts (chapters) of Sattriya Ojapali i.e. an ancient traditional performing art form of Assam.

4. Shri Gopiram was conferred many awards and pensions in recognition of his contribution to Sattriya traditions. The awards and pensions include the status of a Samuhiya Burabhakat (the cultural, religious and administrative head of all the Bhokots) of Sri Sri Uttar Kamalabari Sattra (1990); Artist Pension (Shilpi Pension) by the Government of Assam (1995); Artist Pension by the Government of India (2011); Sangeet Natak Academy Tagore Award in 2012 for his contribution to traditional music of Assam. At the age of ninety six, he is still overflowing with the energy of youth and is a regular practitioner of different art forms.



श्री गोपीराम बरगायन बुढ़ाभक्त

श्री गोपीराम बरगायन बुढ़ाभक्त का पूरा जीवन सत्रीय परंपरा को समर्पित रहा है और उन्होंने अलग-अलग समय पर कलाकार, निर्देशक, डिजाइनर, मूर्तिकार आदि की भूमिका निभाई है। वह सत्रीय परंपरा की सभी विधाओं के विशेषज्ञ हैं और असम के एक प्रतिष्ठित सत्रीय भक्त और सत्रीय कलाकार हैं। वह अत्यधिक विनम्र उस्ताद हैं, जिन्होंने कभी ख्याति की कामना नहीं की लेकिन सदैव बेहतर से बेहतर करने का प्रयास किया।

2. श्री गोपीराम का जन्म 1 जनवरी, 1925 को हुआ। वह असम में सबसे लंबे समय तक भक्त रहे हैं। वह सभी प्राकृतिक और सामाजिक उतार-चढ़ाव के बीच सत्रीय परंपराओं के सबसे मजबूत स्तंभ की तरह खड़े हैं। 15वीं सदी से सत्रीय परंपरा, असम के हिन्दू मठों जिन्हें सत्र कहा जाता है, में वैष्णव भक्ति आन्दोलन के अंग के रूप में विकसित हुई। इस कला का विकास और अभ्यास भिक्षुओं (जिन्हें सत्रों में भक्त कहा जाता है) द्वारा भगवान कृष्ण की कथाओं और पौराणिक गाथाओं पर आधारित नृत्य/नाटक के रूप में किया गया था। उन्होंने गिराम ओझा, खगेश्वर गायन, भोलानाथ नामलोगोवा, सोनाराम बरगायन, चंद्रधर सरमा भगवती और आनंदीराम बरगायन सहित प्रख्यात गुरुओं से क्षेत्र के पारंपरिक संगीत — मठों के बोरगीत, ओजापाली और सत्रीय कला की अन्य विधाओं की शिक्षा प्राप्त की। वह समूहिया बुढ़ाभक्त के रूप में अपने नेतृत्व के लिए जाने जाते हैं और उन्होंने गुरु, बरगायन, बोरोजा, चरित्रतुला, महापुरुष माधवदेव के रूप में अभूतपूर्व योगदान दिया है।

3. श्री गोपीराम ने नई पीढ़ी के कई सत्रीय कलाकारों और अभिनेताओं को प्रशिक्षित किया है एवं उनका मार्गदर्शन किया है जिन्होंने विश्व के विभिन्न हिस्सों में सत्रीय परम्पराएं पहुंचाई हैं। 1930 में पांच वर्ष की आयु में श्री श्री उत्तर कमलाबाड़ी सत्र में आने के बाद, उन्होंने अपना पूरा जीवन, नब्बे वर्ष से अधिक समय, अपने शिष्यों, भक्तों और समाज में सत्रीय संस्कृति के अभ्यास, संरक्षण, संवर्धन और प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित कर दिया है। भक्त के रूप में इक्कानवे वर्ष की अपनी यात्रा में, उन्होंने अपनी क्षमताओं से और सत्रीय परंपराओं के अनुसार अनेक उपलब्धियां हासिल की हैं। असम की सत्र महासभा ने बोरगीत, अर्थात् महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव रचित भजनों के संग्रह; अंकिया गीत, अर्थात् भावना क्रिया के समय गाए जाने वाले भजन; गुरु भोटिमाई अर्थात् महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव के जीवन एवं कार्यों का वर्णन; देवभोटिमाई अर्थात् ईश्वर की प्रशंसा आदि में उनकी उत्कृष्टता तथा सत्रीय ओजापाली अर्थात् असम की एक प्राचीन परंपरागत अभिनय कला के सभी 12 अध्यायों में उनकी उत्कृष्टता के लिए 1982 में उन्हें 'बरगायन' और 'बोरोजा' की उपाधि दी।

4. श्री गोपीराम को सत्रीय परंपराओं में उनके योगदान के लिए कई पुरस्कार और पेंशन से सम्मानित किया गया है। इन पुरस्कारों और पेंशनों में श्री श्री उत्तर कमलाबाड़ी सत्र का समूहिया बुढ़ाभक्त की उपाधि (सभी भक्तों का सांस्कृतिक, धार्मिक तथा प्रशासनिक प्रमुख) (1990); असम सरकार द्वारा शिल्पी पेंशन (1995); भारत सरकार द्वारा शिल्पी पेंशन (2011); असम के पारंपरिक संगीत में उनके योगदान के लिए 2012 में संगीत नाटक अकादमी टैगोर पुरस्कार शामिल हैं। छियानवे वर्ष की आयु में, वह युवा ऊर्जा से ओतप्रोत हैं और कला की विभिन्न विधाओं का नियमित रूप से अभ्यास करते हैं।